ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

द्विभाषी लेखिका सुनीता जैन का साहित्य के क्षेत्र में योगदान

Contribution of Bilingual Writer Sunita Jain in The Field of Literature

Paper Submission: 05/03/2021, Date of Acceptance: 21/03/2021, Date of Publication: 23/03/2021

नीलम देवी
शोध छात्रा,
हिंदी विभाग,
कश्मीर विश्वविालय,
कश्मीर, भारत

सारांश

किसी भी साहित्यकार के रचना संसार को जानने से पूर्व हमें उसके व्यक्तित्व को जानना और समझना अनिवार्य है क्योंकि उसके व्यक्तित्व की साफ झलक उसकी रचनाओं में अभिव्यक्त होती है। यह जानना अति आवश्यक हो जाता है कि रचनाकार का समाज के प्रति दृष्टिकोण कैसा है। उसका आचार–विचार एवं जीवन–दर्शन किस प्रकार का है, क्योंकि उपर्युक्त सभी बातें उसकी साहित्यिक कृतियों में दृष्टिगत होती हैं। संसार में प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रायः दूसरों से भिन्न होता है और यही गुण उसे अन्य लोगों से पृथक भी करता है। इसीलिए साहित्यकार के ब्राह्य व्यक्तित्व के साथ–साथ, कहीं अधिक महत्वपूर्ण है उसके आतंरिक व्यक्तित्व को जानना जिसके अंतर्गत उसका जन्म, परिवेश एवं वातावरण, आचरण एवं व्यवहार आदि सभी तत्व आते हैं। और इस शोध पत्र में शोधकत्री ने प्रत्येक को भलीभांति से दृष्टिपात करने का सहज प्रयास किया है।

Before knowing the creation world of any litterateur, it is necessary to know and understand his personality because the clear glimpse of his personality is expressed in his works. It becomes very important to know what is the attitude of the creator towards the society. What is his ethics and philosophy of life, because all the above things are seen in his literary works. The personality of every person in the world is often different from others and this quality also separates him from other people. That is why along with the outer personality of the writer, it is far more important to know his inner personality, under which all the elements like his birth, environment and environment, conduct and behavior etc. And in this research paper, the researcher has made a simple effort to see each one thoroughly.

मुख्य शब्दः द्विभाषी Bilingual, दृष्टिकोण Vision, दृष्टिगत Insight, व्यक्तित्व Personality, मृदभाषी – Soft Spoken, अभिव्यक्त– Expressed, परिवेश– Environment , आचरण, व्यवहार Conduct.

प्रस्तावना

शोध विधि

प्रस्तुत शोध–पत्र में विवरणात्मक प्रवृति का प्रयोग किया है जिसमे लेखिका के आजीवन साहित्यिक–योगदान का बखान किया गया है और इस जानकारी को संकलित करने में विभिन्न शोध पत्र, ऑनलाइन साइट्स और प्रश्नोत्तरी (जो कि शोधकत्री के निजी–परिवार के सदस्यों से संपन्न हो पाई है) का प्रयोग किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोधपत्र का द्विभाषी लेखिका सुनीता जैन पर आधारित है और शोध का विषय 'सुनीता जैन के कथा–साहित्य में भारतीय एवं पाश्चात्य परिवेश का सामाजिक और सांस्कृतिक चित्रण है'।

1. इस शोध–पत्र के द्वारा शोधकत्री का पहला उद्देश्य लेखिका के जन्म एवं पारिवारिक परिवेश की जानकारी देना है।
2. दूसरा उद्देश्य लेखिका के जीवन–संघर्षो को चित्रित करना है जिसमे भारत से लेकर विदेश तक की जीवन–यात्रा में आई विभिन्न कठिनाईयों को दिखाने का प्रयास किया है और द्विभाषी लेखिका होने के कारण उन्होंने

3. 'हिंदी एवं अंग्रेजी' दोनों साहित्य के क्षेत्र में अपना किस प्रकार से अपरिमल योगदान दिया है उसका चित्रण करना मुख्य उद्देश्य रहा है।
4. इसके साथ तृतीय उद्देश्य है कि लेखिका के विपुल–साहित्य से सब परिचित हो, निसंदेह 'सुनीता जी' ने अपनी लेखनी के सामर्थ्य से पूरे विश्व में अपनी छवि जन्म–जन्मान्तर के लिए बना दी है किन्तु शोधार्थियों का यह परम कर्तव्य है कि उनकी धरोहर को जन–मानस तक पहुंचाए ताकि उनके लिखित रसमय साहित्य से वह भी लाभावंतित हो और उनके आदर्शो को अपने भावी जीवन में अपनाये।

लेखिका का जन्म

सुनीता जैन 13 जुलाई सन् 1940 ईसवी में पंजाब के अम्बाला शहर में जन्मी बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न अत्यंत ही मृदुभाषी एवं कोमल स्वभाव की एवं अपने सामर्थ्य पर अडिग विश्वास रखने वाली एक सशक्त महिला साहित्यकार है। जिन्होंने अपने कलम की शक्ति से न केवल हिंदी साहित्य को अनमोल कृतियों से सुसज्जित किया है बल्कि अपने ज्ञान का ढंका विदेशों में भी बजाया है। यह हम सभी भारतीयों के लिए गौरवान्वित होने वाली बात है कि भारत देश में जन्मी सुनीता जैन के गुणों का बखान न केवल स्वदेश में ही अपितु विदेशों में भी समान रूप से होता आ रहा है। उनकी लिखित कहानी 'फ्लाई द फ्रेंडली स्काई' केनेडा और जर्मनी के पाठ्यपुस्तकों में सम्मलित की गई है और वहाँ की कक्षाओं में पढ़ाई भी जाती है। 'फ्लाई द फ्रेंडली स्काईज' जैन की सबसे प्रिय और व्यापक रूप से लघु कथाएँ हैं। इस कहानी की विश्वव्यापी लोकप्रियता सबसे अधिक इस तथ्य से उपजी है कि यह काफी सार्वभौमिक रूप से भरोसेमंद है, क्योंकि यह अमेरिका में आने वाले कई प्रवासियों के अनुभवों को दर्शाती है– नयापन, अकेलापन और घर की लालसा। इतना ही नहीं प्रतिभा से ओतप्रोत होने के कारण इन्हें विदेशों में दो बार 'मेरी सैन्डोज पेरिस्कूनर' और 'श्रीलैंड' अवार्ड्स से सम्मानित भी किया गया है।

लेखिका का परिवेश (पारिवारिक परिवेश और शिक्षा–दीक्षा)

लेखिका का परिवार अम्बाला शहर का एक संपन्न परिवार माना जाता था। लेखिका के पिता जी का नाम 'सुल्तानसिंह जी' और माता जी का नाम 'हीरा देवी' था। इनके पिता सेशन जज पर कार्यारत थे और इनके परिवार को 'सेशन–हाउस' उपलब्ध था और उसके भीतर पाई जाने वाली अनेकों सेवाएँ जैसे घोड़ा–गाड़ी, दरबान, चपरासी, माली उपलब्ध थी। आर्थिक सम्पन्नता के कारण इनका बचपन बड़े ही वैभव में व्यतीत हुआ। किन्तु दुर्भाग्यवश उनका परिवार भी उसी समाज का एक हिस्सा था जहाँ लड़कियों को पढ़ाने और उनसे नौकरी कराने की मानसिकता नहीं थी। इसी कारण अत्यंत ही संघर्षो से उन्होंने शिक्षार्जन की। इनकी आरंभिक शिक्षा सन 1947 ईसवीं में हिसार (घर से) आरम्भ हुई। 1948 में अम्बाला में 'आर्य कन्या पाठशाला' में प्रवेश लिया। सन् 1952 ईसवीं में 'न्यू मॉडल स्कूल' लुधियाना में दाखिला लिया। 1954 में अमृतसर पंजाब से अपनी मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात केवल अपने पिता जी के सहयोग से उन्हें शहर से दूर दिल्ली में उनके मामा–मामी के पास भेज दिया गया जहाँ सन 1956 में 'इन्द्रप्रस्थ कॉलेज' से उन्होंने बी0ए0प्रेप में दाखिला लिया। प्रेपरिट्री जिसे संक्षेप में हम प्रेप कहते है। इसके करने के बाद ही यह निर्णय लेना होता था कि अब किस तरह का बी0ए0 करना है। पास कोर्से या आनर्स। उस समय दसवीं करने के बाद कॉलेज में दाखिला मिलता था लेकिन मास्टर्स के लिए नहीं बल्कि प्रेप के लिए। प्रेप के बाद मास्टर्स कोर्स किया जाता था। उसके बाद 1959 में बी0ए0 इन्द्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली से उत्तीर्ण की। 1965 में स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क, स्टोनी ब्रूक्र से अंग्रेजी में एम्0ए0 में प्रवेश और 1968 में नेम्ब्रास्का विश्ववि।ालय से पीएचडी आरम्भ और 1972 में पीएचडी की उपाधि अर्जित की।

लेखिका का जीवन–संघर्ष

मनुष्य को जीवन में सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँचने के लिए कई कठिनाओं एवं संघर्षों का सामना करना पड़ता है। लेखिका भी अपने जीवन में अनेकों याचनाएँ सहकर अपने जीवन–पथ पर आगे बढ़ी और कभी भी संघर्षों से हार नहीं मानी। मात्र 19 वर्ष की आयु में विवाह संपन्न हो जाने से उन्हें ऐसा लगा था कि वह जीवन में अब कुछ नहीं कर पाएंगी। उनके पिता श्री सुल्तानसिंह जैन जी का सं 1955 ई० में आकस्मिक निधन हो गया जिस कारण परिवार वालों ने ज्येष्ठ संतान होने के नाते मात्र 19 वर्ष की आयु में 17 नवम्बर 1959 में इनका विवाह डॉ०आदिश्वरलाल जी के साथ संपन्न करवाया और विवाह के तुरंत पश्चात ही लेखिका को अपने पति के साथ अमेरिका प्रस्थान करना पड़ा, जीवन में अचानक से हुए इस अनिश्चित परिवर्तन ने लेखिका के भीतर समस्त आशाओं को समाप्त कर दिया। क्योंकि लेखिका ने अपने बाल्यावस्था में अभी तक जो भी लेखन कार्य किया था लगभग सौ के करीब कविताओं को प्रवासगमन से पूर्व नष्ट कर दिया, क्योंकि वह समझती थी कि विदेश में मेरी लिखी इन हिंदी कविताओं का क्या महत्व ! विदेश में विवाह के तीन वर्ष के अंतराल के पश्चात उन्हें मातृत्व सुख का सौभाग्य प्राप्त हुआ। किन्तु यहाँ भी उन्हें स्वयं के साथ समझौता करना पड़ा। अपनी स्वयं की संतान होने के पश्चात् भी उनके कान माँ शब्द सुनने को तरसते रहे। कारण यह रहा कि स्विट्जरलैंड में सन् 1960 में जन्मी उनकी पहली संतान अनुकिरण को जब भारत देश उसकी दादी से मिलवाने लाया गया तो वहाँ उनकी सास और अन्य परिवारजनों ने 'अनु' को दो वर्ष के लिए उनकी सास के पास ही छोड़ देने को कहा। उनकी सास कहती 'अबके तुम जब लौटोगे, मैं नहीं रहूंगी'।[1] दिल पर पत्थर रखकर लेखिका ने अपनी 7–8 महीने की बच्ची को स्वयं विमान में बैठने से पूर्व उनकी गोद में दे दिया। ऐसी हृदयविदारक घटना और अत्यंत भावुक कर देने वाली स्थिति ने एक माँ के हृदय पर जो आघात पहुँचाया, उसका वर्णन हो सके ऐसा शब्दों में सामर्थ्य नहीं।

स्विट्जरलैंड जाने के उपरांत सन् 1962 ई० में उनकी दूसरी संतान, पहले बेटे रविकांत का जन्म 1962 में ज्युशिक शहर में हुआ और 1964 में शशिकांत का। प्रवास की कठिनाइयों और वहाँ के बोझिल वातावरण से उभरकर लेखिका का एकांत साहित्यिक मन फिरसे अपने अतीत में

हिलोरे भरने लगा और दिल्ली से दूर उस सन्नाटे में अपने मन के भावों को जो कि कुंठा का रूप लेती जा रही थी, उसे अभिव्यक्त करने का सरल माध्यम लिखना ही उत्कृष्ट जाना और उन्होंने एक कहानी लिखना आरम्भ की जो लिखते–लिखते इतनी बड़ी हो गयी कि उसने उपन्यास का रूप ले लिया जिसका नाम था 'बोज्यू'। जिसकी पाण्डुलिपि लेखिका के छोटे भाई के हाथ लगी और सन् 1964 में प्रकाशित होकर आई और इनकी अन्य कहानी 'बिरथा जन्म हमारो' से इतनी ख्याति और प्रसिद्धी मिली कि उस समय लेखिका को अपने भीतर छुपे उस दिव्य आलोक से स्वयं को परिचित करने का एक मार्ग प्रशस्त हुआ और उसे यह आभास हुआ कि लेखन ही उनका भविष्य है।

1963 में सुनीता जी अपने स्वदेश लौट आती है। तब तक वो विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में लिखना आरम्भ कर चुकी थी। 1964 में इनका फिर से अमेरिका जाना हुआ। जहाँ 1967 में 'अडलफाई स्फोल्ड कॉलेज' में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हुई।

1972 में इनकी पुनः भारत में वापसी होती है और दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ कॉलेज में प्राध्यापक का कार्य प्रारंभ करती हैं लेकिन 1973 में इन्होनें इन्द्रप्रस्थ कॉलेज छोडकर श्री अरविंदो कॉलेज में पढ़ाना शुरू किया। किन्तु अपनी बुद्धिमत्ता के कारण अंततः 1974 में इनकी नियुक्ति आई0आई0टी0 के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में हो जाती हैं। जहाँ सुनीता जी ने अपने जीवन के 28 वर्ष यानि 13 जुलाई 2002 तक जब तक वो सेवानिवृत नहीं हुई तब तक वहाँ के छात्रों को साहित्य का ज्ञान देने में लगा दिए। इस कालावधि में वो विभागाध्यक्षा के पद पर भी रही।

लेखिका एक साहित्यकार के रूप में

लेखिका का साहित्यिक कद बहुत ऊँचा है। साहित्य की प्रत्येक विधा पर अपनी लेखनी चलाने वाली सुनीता जैन ने कविता, कहानी, उपन्यास, आत्मकथा एवं आलोचना के क्षेत्र में गुणात्मक और परिणामात्मक दोनों दृष्टियों के अनुसार श्रेष्ठ एवं विपुल साहित्यिक रचना की हैं।

लेखिका का साहित्यिक क्षेत्र में आगमन या यूँ कहें उनके जीवन का साहित्यिक उदय उनके कॉलेज के समय से ही माना जाता है क्योंकि बी0ए0 के प्रथम वर्ष से ही उन्होंने लेखन का छुटपुट कार्य प्रारंभ कर दिया था। वह विभिन्न कविता प्रतियोगताओं में भाग लेने लगी जिस कारण धीरे–धीरे उनकी रचनाओं से उन्हें सब जानने लगे। लेखिका स्वयं अपनी आत्मकथा 'शब्दकाया' में बताती है– 'दूसरे वर्ष तक हिंदी विभाग के लोग मुझे पहचानने लगे क्योंकि मेरे साथ यदि कोई पुरस्कृत होता– जैसे पुष्पा, बाद में रमानाथ अवस्थी जी की पत्नी, तो वे सब हिंदी आनर्स की छात्राएँ होती'।[2] लेखिका की रचनाएँ 'वीर अर्जुन' और 'दैनिक प्रताप' के साहित्यिक पृष्ठों पर छपनी भी शुरू हो गयी थी। उनकी पहली कहानी 'बिरथा जन्म हमारो' 1964–65 में 'धर्मयुग' पत्रिका में प्रकाशित हुई। निरंतर मिले प्रोत्साहन और सफलता से सदैव कुछ न कुछ नया लिखने को प्रेरणा मिलती। 'धर्मयुग' जैसी पत्रिका में लेख छपाना इतना आसान कार्य नहीं था किन्तु लेखिका के लिखावट के आकर्षण ने न केवल पाठकों को बल्कि प्रभाकर माचवे एवं भारत भूषण अग्रवाल जैसे प्रसिद्ध साहित्यकारों को भी प्रभावित किया। उनके लेखन कार्य की सराहना हर जगह होने लगी। 'साहित्य अकादेमी आयोजन' के समारोह में जेनेद्र जी के साथ जब प्रभाकर माचवे और भारत भूषण अग्रवाल जी से उनकी भेंट हुई तो भारत जी ने सुनीता जी को देख के कहा 'तुम्हारी कहानी पर यहाँ काफी चर्चा रही।'[3] आज ऐसे उदार और स्वीकार भरे शब्द कहने वाले लोग हिंदी में नहीं बचे। इतना ही नहीं इनके लिखे 'बोज्यू' और 'सफर के साथी' उपन्यासों की गोष्ठियाँ भी आयोजित हुई है। जिसकी अध्यक्षता कमला रत्नम् द्वारा की गयी और उपन्यास पर बोलने वाले नामवर सिंह जी थे। इतनी सराहना शायद ही किसी लेखक को प्राप्त हुई हो जितनी सुनीता जैन को प्राप्त हुई है।

लेखिका ने साहित्य की रचना अंग्रेजी एवं हिंदी दोनों भाषाओ में की हैं। द्विभाषी लेखिका होने के कारण उनका हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओ के प्रति लगाव था। भले ही सुनीता जैन जी ने एम0ए0 और पीएचडी की डिग्री इंग्लिश विषय में की है परन्तु फिर भी लेखिका स्पष्ट रूप से कहती है कि उन्हें हिंदी से लगाव और प्रेम आरम्भ से ही था। इन्द्रप्रस्थ कॉलेज में ही विषय चयन के समय आनर्स के स्थान पर पास कोर्स चुनना इस बात का प्रमाण है कि उन्हें हिंदी से कितना लगाव था।

सुनीता जैन का साहित्यिक–योगदान

सुनीता जैन ने साहित्यिक क्षेत्र में विशेष ख्याति एवं प्रसिद्धी प्राप्त की है। द्विभाषी होने के कारण उन्होंने हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में साहित्य सृजन करके हिंदी साहित्य को सदा के लिए ऋणी कर दिया है। लेखिका ने जीवनकाल में पाँच उपन्यास, पाँच कहानी–संग्रह और 53 कविता संग्रह, 25 से अधिक बाल पुस्तकें, आत्मकथा एवं कई रचनाओं का अनुवाद भी किया है। यह समग्र साहित्य 14 खंडो में विभक्त हैं।

सुनीता जैन का रचना संसार
(उपन्यास के क्षेत्र में)
बोज्यू

'बोज्यू' उपन्यास 1964 में पेपर बैंक हिंदी पॉकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित हुआ है और इसका पुनः मुद्रण 2010 में हुआ। 'बोज्यू' उपन्यास में 'मुक्ता' के माध्यम से नारी के त्याग एवं बलिदान को दिखाया है कि किस प्रकार से अंतरजातीय समस्याँ के कारण 'मुक्ता' अपने प्रेमी 'चंद्रमोहन' से अलग होती है।

'तुम यही समझाते हो तो ठीक है, चंद्रमोहन! और गलत भी क्या हैं, तुम्हीं बताओ, क्या तुम्हारे पिता जी मान जायेंगे! क्या मेरे हाथ का खाना बना खा लेंगी? अपने मंदिर में मुझसे पूजा करवा लेंगी? इन सबको भी छोड़ो, क्या तुम्हारे परिवार वाले मुझे, एक कायस्थ लड़की को, स्वीकार–मात्र कर लेंगे?[4] प्रस्तुत उपन्यास समाज के बनाएँ गये दकियानूसी कानूनों एवं परम्पराओं पर सीधा प्रहार करता है कि आखिर कब तक समाज के इन नियमों के रहते युवा–वर्ग अपने सपनों की आहुति देता रहेगा। भले ही स्त्री के अपने सपनों अपनी इच्छाओं का दमन होता रहे किन्तु चिरकाल से महिला का जन्म ही दूसरों

को खुश करने के लिए हुआ है और यह परंपरा चलती आ रही है और चलती रहेगी।

सफर के साथी– 1965 (सजिल्द अभिरुचि प्रकाशन)

अपने दूसरे उपन्यास 'सफर के साथी' में भी लेखिका ने नारी मन को बखूबी समझने का प्रयास किया है। इस संसार में सबसे कोमल चीज स्त्री का मन है जो केवल स्नेह एवं प्रेम का भूखा होता हैं। स्त्री केवल प्रेम पाने को आतुर रहती हैं। पतिव्रता होकर और अपने पति को परमेश्वर मानकर उससे सदैव प्रेम पाने को ललायित रहती है और कभी ममतामयी माँ बनकर अपनी संतान को पाकर प्रसन्न होती हैं। प्रेम के दो मीठे बोल ही उसके जीवन के अनमोल उपहार के समान होते है। वह अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सर्वस्व समर्पित कर सकती है किन्तु अपनी संतान के बिछोह को वो कतई नहीं सह सकती। 'सफर के साथी' उपन्यास में स्त्री के मातृत्व ह्रदय को इंगित किया गया है। 'नीरू' अपनी संतान के बिछोह का दर्द सहन नहीं कर पाती और उसका दर्द कुंठा का रूप ले लेता हैं, जिस कारण उसका पति सुकान्त उसे कुछ समय के लिए परिवार से मिलने भारत भेज देता है और जब समुंद्री यात्रा के दौरान धीरज मेहता से उसे स्वयं के लिए प्रेम एवं स्नेह मिलता है तो वो उसकी ओर आकर्षित होती है। किन्तु पतिव्रता और भारतीय महिला होने के कारण अपनी मर्यादाओं के अनुरूप ही अपना निर्णय लेती है।

'नीरजा चेतन होते हुए भी अचेत सी बैठी थी। उसका कम्पन अभी रुका नहीं था..... निशब्द रोने से नीरजा की हिचकी बंध चली..... सुकांत..... सुकांत..... मैं वापस आ रहीं हूँ, सुकांत! मुझे माफ कर देना सुकांत, मैं आ रही हूँ, अब कभी नहीं जाऊँगी.....'[5]

मरणातीत (अभिरुचि प्रकाशन)

'मरणातीत' 1977 में प्रकाशित हुआ। 'मरणातीत' में लेखिका ने उपन्यास की नायिका गोमा के माध्यम से स्त्री की मनोवैज्ञानिकता को दर्शाया है। विवाह के कुछ महीनों बाद ही उसके पति की 'एयर क्रेश' में मृत्यु हो जाती हैं जिस कारण वो विधवा हो जाती हैं। अपने पति के साथ हुए इस दर्दनाक हादसे से उसके मन–मस्तिष्क पर गहरा असर पड़ता हैं। उसका इस संसार में अपने पति के अलावा केवल एक ही सहारा बचा था और वो उसका अपना बेटा। अपने जीवन की आजीविका को सुचारू रूप से चलाने के लिए वो पहले रिसेप्शनिस्ट की नौकरी करती है क्योंकि अधिकाधिक लोगों से बात–चीत करना उसे अधिक लुभाता था। विधवा होने के कारण वहाँ उसे कई तरह की कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था इसलिए अंत में उसने महिला कॉलेज में पढ़ाना प्रारंभ किया। गोमा अपने पति की मृत्यु के पश्चात भी अपने खालीपन में सदैव उसी की समृति को अपने मन में बसाये हुई थी किन्तु सदैव उसे अन्य विवाहित दम्पत्तियों से असुरक्षा की भावना महसूस होती। जब समाचार पत्रों में वो विमान दुर्घटना की खबर सुनती तो उसे सुकून मिलता कि उसके साथ–साथ आज अन्य महिलाएँ भी विधवाएँ हुई है। अखबार उठाकर देखने लगी, एक खबर पढ़ी, फिर सीधे बैठकर दोबारा पढ़ने लगी, 'कल रात वासुसेना का एक विमान दुर्घटनाग्रस्त होकर असम के जंगलों में भटक गया, विमान में कुल छह व्यक्ति थे, खोज जारी है। 'क्रैश' की सम्भावना है....'[6] धीरे–धीरे गोमा ने आँखे मूँद लीं। एकाएक उसके शरीर से सारा तनाव लुप्त हो गया, वहीं कुर्सी से टिक लेट गई।

नौकरी के साथ–साथ गोमा लेखन कार्य में भी निपुण होती हैं और अपने लिखित उपन्यास की पाण्डुलिपि वो लेखक जगदीश वर्मा को दिखाती है जहाँ से उसके जीवन का दूसरा पड़ाव आरम्भ होता हैं। लेखिका उपन्यास में स्त्री के दो रूपों को उजागर करती है एक गोमा जो पतिव्रता है और दूसरी रीता, जिसका अपना भरा पूरा परिवार है उसके बावजूद भी वो अपने विवाह पूर्व प्रेमी के साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती है। आज के समाज की यह भारी विडंबना है कि पति के स्वर्गवास के पश्चात स्त्री यदि पराये पुरुष को देखती है तो वो कलंकित एवं कुलटा मानी जाती है, किन्तु ये कोई नहीं सोंचता कि वो अपना पहाड जैसा आने वाला पूरा जीवन अकेले कैसे व्यतीत करेगी, जगदीश वर्मा से मुलाकात के बाद वर्मा जी गोमा के प्रति आकर्षित होते हैं और सामाजिक मान्यताओं के डर से परे वो गोमा को अपनाने का फैसला लेते है किन्तु गोमा उनके निर्णय को स्वीकार करने में स्वयं को असमर्थ समझती है।

अनुगूँज (अभिरुचि प्रकाशन) 1977। लेखिका ने अपने तीसरे उपन्यास 'अनुगूंज' में नायिका 'छवि' के माध्यम से विवाहोपरांत स्त्री के भीतरी अंतर्द्वंद को दिखाया है। अनमेल विवाह हो जाने से उसकी जिंदगी सारहीन हो जाती है। दाम्पत्य जीवन में यदि आपसी समझ और भावनाओं का समावेश न हो तो रिश्ते अधिक देर तक नहीं टिक पाते है। छवि और मदन के आपसी व्यवहार एवं भिन्न विचारधारा के कारण उन दोनों के बीच सदैव दूरी बनी रही। रिश्ते नाजुक डोरी से बने हुए होते है जो प्रेम से पनपते है। स्त्री का सुख ही अपने पति के साथ होता है लेकिन अगर किसी कारणवश उस सुख से वंचित रह जाती है तो उसका जीवन दुखमय हो जाता है। उपन्यास की नायिका 'छवि' भी इस समस्या से जूझ रही है। उसका पति मदन अधिकतर अपने काम में ही व्यस्त रहता है और अधिकांश समय घर से बाहर ही व्यतीत करता हैं। लगातार अकेलेपन से जूझने के कारण छवि के भीतर सूनापन घर कर लेता है। ना चाहते हुए भी वह सोचती हैं 'कभी जी करता हैं समय काटने को कुछ सहारा ढूँढ लूँ उस शायर की तरह, जिसने कहा है– तू अगर बुरा न माने..... मैं सुकूने दिल के खातिर कोई ढूँढ लू सहारा, पर क्या, पुरुष शराब पीते हैं, सिगरेट, दोस्त, क्लब.... स्त्री क्या यह सब कर पाती है! कुछ अपने संस्कार रोक देते हैं.....'।[7] भीतर के सूनेपन से छवि इतनी क्षतिग्रस्त हो गई थी कि उसे इस बात की सुध–बुध भी नहीं रह पाई कि आखिर कब और कैसे वह अपने पति के मित्र भारती के प्रति आकर्षित हो गई और भावनाओं में बहकर स्वयं को उसके प्रति समर्पित कर दिया था।

'कुछ पूछो नहीं, कुछ भी पूछो नहीं, सिर्फ बताओं .... बताओं.... मुझे प्यार करते हो ....।

.... यह भी कोई पूछने की बात है।'

'नहीं तो फिर पूछने की बात क्या है– यही सुनने को यहाँ तक आई हूँ और कहना तुम्हे होगा। बोलो'

'जानते हो.....' वो बोली थी' 'बहुत छोटी थी तब से प्यार पाना और देना चाहा है। उसी के लिए इतनी लम्बी प्रतीक्षा!'

शब्द सभी शेष रह गए थे– लगता था दोनों हारेंगे। उस समय होश इतना नहीं था कि समझ सकूँ। आज सोंचता हूँ, एक विष को काटने के लिए वह जान–बूझकर दूसरा विषपान कर रही थी।

'देखो छवि रो रही हो, मन में भ्रान्ति हो रही हैं.....'

नहीं वैसा न सोंचना कभी भी। तुम्हे मैं यहाँ लाई थी और मैं बहुत खुश हूँ ..... कैसे बताऊँ .....' [8]

बिंदु (हिंदी पॉकेट बुक्स, प्रकाशन–1977)

अपने अंतिम उपन्यास 'बिंदु' में सुनीता जैन ने ऐसी नारी का प्रारूप हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है जिसके भीतर जीने की उमंगए कुछ कर जाने की जिज्ञासा, अपरिमित उल्लास भरा हुआ है। अपने बालावस्था से ही अपने कार्य के प्रति समर्पण भाव के कारण बिंदु हर क्षेत्र में अव्वल आती रही। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की पुत्री होने के कारण बिंदु विभिन्न शहरों से परिचित थी क्योंकि अक्सर उनके पिता जी का तबादला नए–नए शहरों में होता रहता था। परन्तु घर में अपनी माता जी एवं भाई–बंधुओं से बिंदु को कभी स्नेह नहीं मिल पाया। वो अपने घर में रहकर भी स्वयं को अजनबियों जैसा महसूस करती थी। परिवार में हर समय घृणा की दृष्टि से देखने के कारण बिंदु घर पर भी डरी एवं सहमी सी रहती थी। वो सदैव इसी आशा में रहती कि कभीं तो उसे भी भाई जैसा प्यार मिलेगा, उसे भी कोई प्यार से पुकारेगा। किन्तु ऐसा नहीं हो पाया, अपने जीवन में पहली बार स्नेह का आभास उसे अपने बुआ के बेटे आदित्य से होता है जो उसके घर में पढ़ने के लिए रहता हैं। किन्तु उसके चले जाने के बाद उसका जीवन फिर से मुर्झाये हुए फूल की तरह हो जाता है उसके भीतर फिर से सूनापन छा जाता है। अक्सर यह देखा गया है कि घर पर बच्चों को जब परिवार से स्नेह नहीं मिल पाता है तो उनके भीतर कुंठा जन्म ले लेती हैं। जिस कारण उनके भीतर बुरी आदतें प्रवेश करती है। बिंदु अपने बाल्यकाल से ही तिरस्कार सहती आई थी अतः अपने पिता के दिल्ली तबादले के साथ ही वहाँ मकान मालिक के लड़के कुमार से उसकी मित्रता हो जाती है। कुमार के प्रति बिंदु के मन में प्रेम पाने की लालसा प्रखर होती जाती है और कुमार भी बिंदु के प्रति प्रणयातुर समर्पित होने को लालायित रहता है किन्तु दोनों के सम्बन्ध को परिवार की स्वीकृति नहीं मिलती क्योंकि बिंदु की माँ उसका विवाह एक संपन्न व्यक्ति कृष्णकान्त से करवाना चाहती है और सफल भी होती है। किन्तु विवाहोपरांत कृष्णकांत के भीतर शक का ऐसा कांटा गड जाता है जो बिंदु के सम्पूर्ण जीवन को नारकीय बना डालता है। कृष्णकान्त बिंदु को पहाड़ भेज देता है बेटे अजय को माँ से दूर पढ़ने के लिए इंग्लैंड भेज देता है। इतनी यातनाएँ सहने के बाद बिंदु अपनी बुआ के साथ अमेरिका चली आती है जहाँ जीवनयापन के लिए पढ़ाने का कार्य आरम्भ करती है। उपन्यास में लेखिका ने स्त्री की वास्तविकता को दर्शाया है कि स्त्री के भीतर करुणा, दया, परोपकार सहनशीलता आदि सभी गुण विराजमान होते हैं और केवल स्त्री को ही लगातार जिंदगी के थपेड़े खाने के पश्चात भी अपने अहं का बलिदान देना पड़ता है। पति द्वारा अपमानित की गयी बिंदु को अंततः कर्तव्य निभाने के लिए भारत लौटना पड़ता है। इतना कुछ सहने और होने के बाद भी बिंदु को भारत लौट जाने को कहा जाता है क्योंकि उसके पति कृष्णकान्त को दिल का दौरा आया हुआ था।

तितिक्षा– उपरोक्त पाँच उपन्यास (आत्माराम प्रकाशन) 2000

उन दिनों पाँचो उपन्यास (अनन्य प्रकाशन) 2016

कहानी–संग्रह

1. हम मोहरे दिन रात के– पूर्वोदय प्रकाशन– 1970
2. इतने बरसो बाद– पूर्वोदय प्रकाशन–1977
3. या इसलिए– सजिल्द तथा पेपर बैंक रेमाधव– 2007
4. पाँच दिन– हिंदी पॉकेट बुक्स–2009
5. पालना– समग्र कहानियाँ– स्टार बुक्स – 2000
6. बडकू चाचा – अंतिका प्रकाशन–2008
7. प्रेम कहानियाँ – नमन प्रकाशन–2009
8. यादगारी कहानियाँ– हिंदी पॉकेट बुक्स– 2010
9. लोकप्रिय कहानियाँ – प्रभात प्रकाशन–2016

आत्मकथा

1. शब्दकाया– सरस्वती सदन –2005 (पुनः मुद्रण पेपर बैक)

हिंदी पॉकेट बुक्स– 2007

यपुनः मुद्रणद्ध नई किताब–2016

बाल– साहित्य

मंकूए एक सुदामा एक बनमालीए चौन्दपुर की चटाईए मेंढक–मेंढकी की है शादी इत्यादि।

कविता–संग्रह

1. हो जाने दो मुक्त– यपुरस्कृतद्ध – अभिरुचि प्रकाशन– 1978
2. कौन सा आकाश – अभिरुचि प्रकाशन– 1980
3. एक और दिन– अभिव्यंजना प्रकाशन– 1983
4. रंग– रति य पुरस्कृतद्ध – नेशनल प्रकाशन– 1986
5. कितना जल– नेशनल प्रशन– 1988
6. कातर बेला– नेशनल प्रकाशन– 1996
7. सूत्रधार सोते है– अभिरुचि प्रकाशन– 1995
8. सच कहती हूँ– अभिव्यंजना प्रकाशन–1995
9. कहाँ मिलोगी कविता– प्रभात प्रकाशन–1995
10. पौ फटे का पहला पक्षी – नेशनल प्रकाशन–1996
11. युग क्या होते और नहीं– पूर्वोदय प्रकाशन– 1995
12. सुनो मधु किश्वर– अनन्य प्रकाशन– 1995
13. धूप हठीले मन की– प्रवीण प्रकाशन– 1995
14. इस अकेले तार पर– किताब घर– 1995
15. मुकं करोति वाचालाम्म– प्रवीण प्रकाशन– 1996
16. जाने लड़की पगली– पोर्वोदय प्रकाशन – पेपर बैंक रेमाधव –1996 तीन संस्करण
17. सीधी कलम सधे ना– किताब घर– 1996
18. जी करता हैं– अभिरुचि प्रकाशन– 1996
19. लेकिन अब– अनन्य प्रकाशन– 1996
20. बोलो तुम ही– अनन्य प्रकाशन– 1997–1998
21. इतना भर समय– सार्थक प्रकाशन– 1998
22. हथकड़ी में चाँद– प्रवीन प्रकाशन– 1998
23. गंगा तट देखा– वाणी प्रकाशन– 1999

24. सुनो कहानी– रीड बुक्स– 2003
25. माधवीरू सुनीता जैनरू अब तक क्ष्खंड 8द्व – सार्थक प्रकाशन– 2003
26. तरु तरु की ढाल पे– रीड बुक्स– 2003
27. तीसरी चिट्ठी– सिद्धार्थ– 2003
28. जो मैं जानती– सार्थक प्रकाशन–2003
29. दूसरे दिन– बिब्लियोफाइल– 2004
30. चोखट पर व उठो माधवी य पुरस्कृतद्ध– मेधा बुक्स – 2006
31. प्रेम में स्त्री
32. संस्करण 2006– रेमाधव –2006
33. प्रेम में स्त्री 2007, 2008– रेमाधव पेपर बैंक – 2007
34. बारिश में दिल्ली– मेधा बुक्स– 2007
35. इस बार– सरस्वती सदन– 2007
36. खाली घर में– आलोक पर्व– 2007
37. लाल रिबन का फुलवा– अंतिका प्रकाशन– 2007
38. किस्सा तोता मैनाय सलतपबेद्ध– अंतिका प्रकाशन– 2007
39. फैंटेसी – अंतिका प्रकाशन– 2007
40. क्षमा य पुरस्कृतद्ध – यखंड काव्यद्ध – रेमाधव प्रकाशन 2008
41. गन्धर्व पर्व– खंड काव्य –रेमाधव –2008
42. कुरवक– रीड बुक्स– 2008
43. लुओं के बेहाल दिनों में– अंतिका प्रकाशन– 2008
44. ओक भर जल– रेमाधव– 2010
45. हेरवा– अंतिका प्रकाशन– 2010
46. रसोई की खिड़की में– अंतिका प्रकाशन– 2010
47. सूरज छुपने से पहले– रेमाधव (समग्र खंड – 13) – 2010
48. सूरज छुपने से पहले – इमेज इंडिया– 2012
49. हुई साँझ की बेर– रेमाधव– 2012
50. अगर कभी लौटी तो– इमेज इंडिया– 2012
51. तो भी – आकृति प्रकाशन– 2012
52. राग और आग– अनन्य प्रकाशन– 2013
53. टेशन सारे –सभ्य प्रकाशन– 2013
54. सौ टंच माल– बोदी प्रकाशन– 2014
55. काँटों भरी बेला में– सभ्य प्रकाशन– 2015
56. बेघर औरते–अनन्य प्रकाशन– 2016

अनुवाद

1. बंटी (अंग्रेजी) उपन्यास – मनु भंडारी– अक्षरा प्रकाशन– 1974
2. प्रेमचंद–एक कृति जेनेन्द्र कुमार व्यक्तित्व अंग्रेजीदृवाई के पब्लिशर्स–1993
3. मुक्ति, अंग्रेजी कविताएँ मुनि क्षमा सागर– रेमाधव– 2006
4. मेगदूत (अंग्रेजी) कालिदास समग्र खंड 14 – रेमाधव– 2010
5. ऋतूसंहार (अंग्रेजी) कालिदास– किताबघर– 2010
6. मुलान्रुंजय हिंदी उपन्यासद्ध – सस्ता साहित्य मंडल– अनुवंदित
7. आधुनिक भारतीय कविता– संचयन हिंदी य' साहित्य अकादमी देल्ली के लिए अंग्रेजी अनुवाद।

Novel

A girl of her age & Winner of the Vreeland Award, USA) & Atma Ram & 2003

Poetry

1. Man of My Desires & Writers Workshop & 1976
2. Between You and God & Writers Workshop &1978
3. Beneath the Frost & Chetna &1979
4. Love Time & Arnold Heinemman& 1980
5. Silences & National _ 1982
6. Till i~ Find Myself & sterling& 1986
7. Find Me With Rain& Amrit& 1989
8. Sensum& My Word Press& 2000
9. American Desi& Read books& 2007

पुरस्कार

लेखिका देश–विदेश में विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित होती आई। जिनमें श्मेरी सैंडोज फिक्शन अवार्डश् और श्रीलैंड अवार्डश् प्रमुख है। मेरी सैन्डोज और रीलैंड पुरस्कार संयुक्त राज्य अमेरिका में नेब्रास्का–लिंकन विश्ववि॥लय द्वारा दिए गए साहित्यिक पुरस्कार हैं। डॉ। जैन 1970 और 1971 दोनों में प्रेयरी शूनर पुरस्कार के दो बार प्राप्तकर्ता थी ।

ष्रीलैंड पुरस्कार' लेखिका को ष्बोज्यू' उपन्यास पर मिला जिसका अंग्रेजी रूपांतर ष् हपतस वि ीमत ंहम' है।

भारत में भी उन्हें ष्निराला नमित पुरस्कारष् ष्साहित्यकार सम्मानए मिला। ष्हिंदी अकादमी दिल्ली' द्वारा ष्साहित्यिक कृति सम्मान' 2006–2007 ष्चौखट पर उठो माधवी के लिए' मिला। इसके अतिरिक्त ष्जयशंकर प्रसाद पुरस्कार' और ष्साहित्य भूषण' भी अर्जित किया। 30 जून 2004 में ष्भारत सरकार' द्वारा उन्हें ष्पद्मश्री' से सम्मानित किया गया है। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थानए तथा प्रभा खेतान पुरस्कारों के अलावा उन्हें महादेवी वर्माए ब्राह्मी सुन्दरीए सुलोचनी लेखिका जैसे सम्मानों से नवाजा गया। उन्हें इंदिरा गाँधी मेमोरियल फेलोशिप भी मिली। अमेरिका के अतिरिक्त बेंकाक, मारीशस और लन्दन के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में आलेख प्रस्तुत किये।

''30 जून, 2004 को भारत के राष्ट्रपति डॉण् आण्पण्जैण् अब्दुल कलाम द्वारा 'पद्मश्री' से सम्मानित सुनीता जैन'' 9

'हिंदी अकादमी द्वारा सं 2006–2007 को 'चौखट पर व उठो माधवी' के लिए पद्मश्री से सम्मानित सुनीता जैन।' 10

'भारतीय प्रशासकों का संघ' द्वारा सम्मानित सुनीता जैन'। 11

श् ष्सुनीता जैन' के बारे में अधिक जानकारी एकत्रित करने के लिए एचूँकि सुनीता जी अब हमारे बीच नहीं है उनका निधन 11 दिसम्बर 2017 को नई दिल्ली में हुआ। अतरू मैंने उनके ज्येष्ठ पुत्र श्रवि जैनश् जोकि अमेरिका प्रवासी है उनसे प्रश्नोतरी द्वारा लेखिका के बारे में अधिक जानने का प्रयास किया है।

शोधार्थी नीलम– सरए आपका बहुत बहुत आभार। अपने इतने व्यस्त दिनचर्या में भी समय निकलकर मुझपे जो अनुकम्पा की है उसकी मैं सदैव आभारी रहूँगी। हमें लेखिका के बारे में अधिक जानकारी चाहिए इसके

लिए मुझे आपकी समझेदारी आवश्यक लगी अतरू कृपया करके मुझे लेखिका का जन्म तिथि तथा जन्म स्थान बताये क्योंकि अधिकतम पुस्तकों में या अन्य शोधार्थियों के शोध में लेखिका का जन्म 1940 और अन्य स्थलों पर 1941 बताया गया है।

Ravi : Sunita Jain & Born in Ambala, 1941, ;Some ffoicial documents inaccurately state her birth year as 1940).k~

शोधार्थी नीलम– सरएसुनीता जैन के नाम के साथ श्जैनश् उपनाम यह दर्शाता है कि लेखिका जैन धर्म से सम्बन्ध रखती थी। उपयुक्त यहाँ मेरा यह निजी मत गलत भी हो सकता है ए किन्तु यदि ऐसा वास्तव में है तो कृपया इस रहस्य की सार्थकता सिद्ध करेघ् और विस्तारपूर्वकता हमें इस तथ्य से अवगत कराये।

Ravi : ä.k~ Jain was born into a Jain family, married into a Jain family, and received many honors for her work from the Jain community.

शोधार्थी नीलम – सर, सुनीता जैन के साहित्य का अधयन्न करने से मुझे इंगित हुआ कि उनकी अधिकांश कहानियों का कथा–विन्यास इस तरह से निरुपित हुआ है कि कही हद तक ऐसा प्रतीत होता है कि वह सब उनकी निजी जीवन का ही प्रतिबिम्ब है। अपने जीवन के कुछ सुखद या दुखद पलों को उन्होंने अपने कलम से कागज पर उतारा है। यह मेरा निजी मत है। उदाहरण के लिए कहानी 'पाँच–दिन' की पात्र योजना देख ली जाये या और भी अन्य स्थल पर भी लेखिका अधिकतम एक बेटी, दो बेटे तथा पति को दिखाने का प्रयास करती है और अंत में एक–एक करके उन सबका विदेश में बस जाना भी दिखाया है, जो कही हद तक उनकी निजी जीवन का ही प्रतिबिम्ब है। आपका इस पर क्या मत है ?

Ravi : ä.k~ Jain used many of her own personal experiences and those that she observed of others as inspiration for her creative work.

शोधार्थी नीलम– प्रतिभा से ओत–प्रोत लेखिका आजीवन कई पुरस्कारों से सम्मानित होती आई है। कृपया विस्तारपूर्वक हमें उनसे परिचित करवाए। और विदेश में सम्मानित हुई दो पुरस्कार 'मेरी सेंडोज पेरिसकूनर' और 'रीलैंड' अवार्ड के बारे में भी बताये कि किन कृतियों पर लेखिका को यह दो सम्मान प्राप्त हुए तथा इन अवार्ड्स के बारे में भी बताये कि यह किस देश में दिए जाते है?

Ravi: The Mari Sandoz /k~ Prairie Schooner and Vreeland awards are literary awards given by the University of Nebraska&Lincoln in the United States.k~ ä.k~ Jain was a two&time recipient of the Prairie Schooner award in both 1970 and 1971.k~ You can learn more about the award programhere.

शोधार्थी नीलम– सरए विभिन्न विद्वानों और साहित्यकारों ने लेखिका की लेखनी पर समीक्षाएँ की है और अपनी समीक्षाओं में यह भी बताया है कि उनकी लिखित श्फलाई द फ्रेंडली स्काईश् नामक कहानी विदेशो के पाठ्यक्रम में सम्मिलित की गयी है और पूर्ण रूप से यह वहाँ के वि ार्थियों को पढ़ाई भी जाती है। मेरे भीतर यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई है और समस्त पाठकजन यह जानने को आतुर है कि आखिर इस रचना में ऐसा क्या विशेष तत्व है जो यह विदेशों के पाठ्क्रम में सम्मलित की गयी।

Ravi : 'Fly the Friendly Skies'k~ is one of ä.k~ Jain"s most beloved and widely read short stories.k~ The world wide popularity of this story most likely stems from the fact that it is quite universally relatable, as it depicts many immigrants'k~ experiences in coming to America & the newness, loneliness, and longing for home.

शोधार्थी नीलम – सुनीता जी 1960 के दशक की वरिष्ठ महिला साहित्यकार है ए ऐसे समय की जब साहित्य में महिलाओं की भागेदारी ना के बराबर समझी जाती थी। ऐसे विषम समय में भी उन्होंने अपनी लेखनी से हिंदी साहित्य को सदा के लिए ऋणी कर दिया। कृ पया हमें बताये कि लेखिका को साहित्य की ओर अग्रसर करने में किनका महत्वपूर्ण योगदान है क्या उनके परिवार में से कोई साहित्य प्रेमी था या उनको बचपन से ही साहित्यिक वातावरण मिलता रहा जो सदैव उन्हें प्रोत्साहित करता रहाघ

Ravi: ä.k~ Jain had a personal passion for literature and writing that came from within and her love of literature started at a very young age.

शोधार्थी नीलम – सुनीता जी ने अपनी लिखित 'शब्दकाया' में स्वयं अपने पति डॉ आदेश्वरलाल जी को समस्त श्रेय दिया है कि उनके प्रोत्साहन और उचित मार्गदर्शन से ही उन्होंने अमेरिका में विवाहोपरांत स्नातकोतर और पीएचडी की उपाद्धि इंगिलश विषय में नेम्बर्क यूनिवर्सिटी से उत्तीर्ण कीए इंग्लिश की ऐसी प्रखंड विद्वान होने के उपरांत भी क्या लेखिका को हिंदी साहित्यकार की श्रेणी में रखना उनके लिए न्याय होगाघ् द्विभाषी लेखिका के गुण से ओतप्रोत होने के कारण से उनकी लेखनी तो अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं पर समान रूप से चली है। आप लेखिका को किस श्रेणी की साहित्यकार से संबोधित करना चाहेगे। क्योंकि अधिकांश यह मतभेद उत्पन्न हो जाता है कि सुनीता जी प्रवासी अंग्रेजी लेखिका है।

Ravi : ä Jain always took much pride in considering herself a true bilingual writer.k~ Her English work was very dffierent from her Hindi work.k~ She often said that whatever thought came to her in one language had to be written in that language and could not be translated into the other language, because the expressions of each language are so very dffierent.k~

शोधार्थी नीलम– सर, सदैव यह देखने को मिलता है कि सब अपने परिवार के साथ में रहकर ही जीवनयापन करना चाहते है, जैसे कि 'शब्दकाया' में सुनीता जी ने बताया है कि उनके छोटे पुत्र शशिकांत के अलावा उनका समस्थ परिवार एक एक करके विदेश में चला गया। ऐसे में भी सुनीता जी ने आखिर भारत ही क्यों चुना, जबकि अपनी प्रतिभा से वह विदेश में भी एक अच्छे पद पर आसक्त हो सकते थे।

Ravi : ä.k~ Jain successfully lived in both worlds, she visited the United States regularly where most of her family lived and also spent considerable

time in India where her youngest son and extended family lived.k~ In the United States she had a very prestigious position at the University of Nebraska, when she returned to India she held other prestigious positions in Delhi, including the Head of the Humanities Department at IIt~ Delhi.k~ She chose to live this way because it gave her the maximum joy.

शोधार्थी नीलम– सरए कृपया बताये कि लेखिका के समकालीन साहित्यकार कौन–कौन थे ? वह अत्यधिक किनसे प्रभावित थी ?

Ravi : ä.k~ Jain had a love for all literature both by her contemporaries as well as those who came before her.k~ She used to say that she learned something from all authors that she read.

शोधार्थी नीलम– लेखिका की अभिरुचियाँ hobbies क्या थी।

Ravi : ä.k~ Jain loved to promote art in all of its forms.k~ Whether it was writings of young writers, or paintings by undiscovered artists, or preserving the past by collecting antique textiles and woodwork.k~ She saw beauty in all of these things.k~ She also loved nature and planted beautiful gardens at the temples she built.k~ 'k~ 12

निष्कर्ष

लेखक भी समाज का प्राणी ही होता है लेकिन उसके भीतर लेखककीय दृष्टि होती है जिसके अंतर्गत प्रत्येक वस्तु को देखने का उसका अपना दृष्टिकोण ही उसे सामान्य जन से पृथक करता है। सुनीता जैन ने अपना सम्पूर्ण जीवन साहित्यिक साधना में लगा दिया। वह एक आदर्शमयी भारतीय नारी का प्रतीक है। यह बहुत ही दुर्भाग्य की बात है कि ऐसी कर्मठ साहित्यकार जिन्होंने अपनी अमूल्य कृतियों से न केवल हिंदी जगत को समृद्ध किया अपितु समस्थ संसार को अपनी लेखनी से अभिभूत करके सदा के लिए ऋणी कर दिया हैए ऐसी साहित्यकार अब हमारे बीच नहीं रही। यह देश को बहुत बड़ी क्षति है। एक सफल लेखक वही है जिसका साहित्य अध्ययन करके लगे कि जो कुछ भी उसने लिखा गया है वह पूर्ण यथार्थ है। सुनीता जैन के साहित्य की बात करे तो इन्होने अपने लिखित कहानी–संग्रह में पाश्चात्य परिवेश को दिखाया हैं उनकी कहानियाँ पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि समस्त कहानियाँ उनके जीवन का ही प्रतिबिंब हैं। मूल रूप से लेखिका ने अपने लिखित साहित्य में प्रवास की कठिनाईयों को दर्शाया है और साथ में नारी मन को बखूबी समझने का प्रयास किया है। कहानी में जो कुछ भी घटित या दिखाया गया होता है कही न कही उसका सम्बन्ध उनके अपने निजी जीवन से ही होता है। प्रत्येक कहानी में उन्होंने जिस तरह से पात्र–योजना निश्चित की है ऐसा प्रतीत होता है जैसे उनका स्वयं का ही निजी परिवार है। मुख्यता वो कहानी में परिवार के पाँच पात्रों का उल्लेख करती है जिसमे दो बेटे एक बेटी और पति–पत्नी सम्मिलित होते है। और सुनीता जैन का अपना निजी परिवार भी ऐसा ही है। अपनी लिखित कहानी पाँच दिन में यह साफ तोर से दिखता है। कहानियों के कथानक में अधिकांश बेटा और बेटी का विदेश में जाकर बस जाना दिखाया गया हैं और लेखिका का बड़ा बेटा रवि और बेटी अनुकिरण भी विदेश में जाकर बस जाते है। लेखिका ने यह दिखने का प्रयास किया है कि आज भारत के युवक शिक्षार्जन करने के लिए विदेश जाते हैं और फिर विदेशी रंग में रंगकर अपना स्वदेश छोडकर विदेश जाकर अपना जीवनयापन करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. *जैन, सुनीता, शब्दकाया, सरस्वती विहार, प्रथम संस्करण 2005, पृष्ठ–12*
2. *वही, पृष्ठ– 26*
3. *वही, पृष्ठ–108*
4. *जैन सुनीता, सुनीता जैन समग्र, माधव पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण 2010, पृष्ठ–90*
5. *वही, पृष्ठ–155*
6. *वही, पृष्ठ–209*
7. *वही, पृष्ठ–177*
8. *वही, पृष्ठ–197*
9. *जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, प्रेमचंद अभिलेखागार एवं साहित्यिक केंद्र, नई दिल्ली*
10. *वही*
11. *वही*
12. *प्रश्नोतरी भाग, जैन, रवि, अमेरिका*